**The Asian Thinker**
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
**Website:** www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

# 13. भारतीय ज्ञान परंपरा : श्रीमद्भगवद्गीता में आध्यात्मिक, जीव-विज्ञान दृष्टिकोण-एक अध्ययन

**डॉ. शिव सिंह**
सहायक प्राध्यापक (जन्तु विज्ञान)
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया (म.प्र.)

## 1. शोध सार

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय ज्ञान परंपरा का एक प्रमुख दार्शनिक ग्रंथ है, जिसमें जीवन, चेतना और अस्तित्व के स्वरूप का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र "भारतीय ज्ञान परंपरा : श्रीमद्भगवद्गीता में आध्यात्मिक जीव-विज्ञान दृष्टिकोण — एक अध्ययन" का उद्देश्य गीता में निहित जीवन-दर्शन को आध्यात्मिक जीव-विज्ञान (Spiritual Biology) की दृष्टि से समझना है। गीता के अनुसार जीव केवल जैविक संरचना नहीं, बल्कि चेतन आत्मा की अभिव्यक्ति है। शोध में श्लोकों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि गीता में सभी जीवों को समान चेतन सत्ता माना गया है तथा जीवन की अवधारणा करुणा, समता और नैतिकता पर आधारित है। यह अध्ययन आधुनिक जीव-विज्ञान के भौतिकवादी दृष्टिकोण के साथ गीता के चेतना-आधारित दर्शन का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। निष्कर्षतः यह शोध एक चेतना-केंद्रित, जैव-आध्यात्मिक (Bio-Spiritual) जीवन मॉडल की स्थापना करता है, जो मानव तथा अन्य सभी जीवों के सह-अस्तित्व और नैतिक जीवन-दृष्टि के लिए एक समन्वित वैचारिक ढाँचा प्रदान करता है।

**2. संक्षिप्त (Keywords)-**

आत्मा (Soul),शरीर (Body) ,जीवतत्त्व (Nature of Living Being),त्रिगुण (Three Gunas) – सत्त्व, रजस्, तमस्, मोक्ष (Liberation) ,क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ (Body-Soul Distinction) तथा आध्यात्मिक जीव-विज्ञान (Spiritual Biology)।

## 3. प्रस्तावना (Introduction) —

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अद्वितीय और शाश्वत ग्रंथ है, जिसमें जीवन, चेतना और अस्तित्व के मूल प्रश्नों पर गहन दार्शनिक विमर्श मिलता है। सामान्यतः इसे एक आध्यात्मिक, नैतिक और योगशास्त्रीय ग्रंथ के रूप में देखा जाता है, किन्तु इसके सिद्धांतों में जीवन-विज्ञान (Biology) से संबंधित एक गूढ़ आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी निहित है।

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय ज्ञान परंपरा का एक ऐसा अद्वितीय ग्रंथ है, जो जीवन को केवल भौतिक या जैविक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक, नैतिक एवं चेतना-आधारित दृष्टिकोण से समझाता है। आधुनिक जीव-विज्ञान

**The Asian Thinker**
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
**Website:** www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

(Biology) जीवों का अध्ययन मुख्यतः शारीरिक संरचना, जैविक क्रियाओं, आनुवंशिकी, व्यवहार और विकास-क्रम के आधार पर करता है, जबकि गीता जीवन को एक चेतन सत्ता (Conscious Being) के रूप में परिभाषित करती है।

गीता के अनुसार जीव मात्र शरीर नहीं है, बल्कि शरीर के भीतर स्थित आत्मा (चेतना तत्त्व) ही वास्तविक जीव है। यह दृष्टिकोण आधुनिक जीव-विज्ञान की भौतिकवादी अवधारणा से भिन्न होते हुए भी उससे विरोधी नहीं है, बल्कि उसे एक उच्चतर दार्शनिक आधार प्रदान करता है। गीता में वर्णित आत्मा, गुणत्रय सिद्धांत, करुणा भाव, सर्वभूत समता, और चेतना-केन्द्रित जीवन-दृष्टि ऐसे तत्त्व हैं जो आध्यात्मिक जीव-विज्ञान (Spiritual Biology) की एक स्वतंत्र वैचारिक संरचना निर्मित करते हैं।

यह अध्ययन गीता के श्लोकों के आधार पर यह विश्लेषण करने का प्रयास करता है कि किस प्रकार गीता में जीवों को केवल जैविक इकाई न मानकर चेतन, नैतिक और आध्यात्मिक सत्ता के रूप में देखा गया है। साथ ही यह शोध आधुनिक जीव-विज्ञान के सिद्धांतों के साथ गीता की अवधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिससे एक समन्वित जैव-आध्यात्मिक (Bio-Spiritual) जीवन मॉडल का निर्माण होता है। यह शोध न केवल धार्मिक-दर्शन तक सीमित है, बल्कि पर्यावरण, जैव-नैतिकता (Bioethics), संरक्षण विज्ञान (Conservation Biology) और जीवन-दर्शन के क्षेत्र में भी इसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है।

## 4. शोध-पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध का स्वरूप गुणात्मक (Qualitative), ग्रंथीय (Textual) तथा सैद्धांतिक (Theoretical) है। यह अध्ययन प्रयोगात्मक या क्षेत्रीय सर्वेक्षण पर आधारित न होकर, श्रीमद् भागवत गीता के श्लोकों, दार्शनिक व्याख्याओं तथा संबंधित द्वितीयक साहित्य के विश्लेषण पर आधारित है। शोध में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए गीता में निहित जीवन-दृष्टि का आध्यात्मिक जीव-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है। अतः यह शोध एक अवधारणात्मक (Conceptual) एवं व्याख्यात्मक (Interpretative) प्रकृति का अध्ययन है, जिसका उद्देश्य चेतना-आधारित जीवन-दर्शन का वैज्ञानिक-आध्यात्मिक समन्वय प्रस्तुत करना है

## 5. सैद्धांतिक आधार (Theoretical Framework)

### 5.1 जीव का स्वरूप

गीता (2.20) में कहा गया है—

गीता के द्वितीय अध्याय में आत्मा की नित्यता का वर्णन करते हुए कहा गया है—

**"न जायते म्रियते वा कदाचिन्**
**नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।**
**अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो**
**न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥" (2.20)**

**The Asian Thinker**
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
**Website:** www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

आत्मा कभी जन्म नहीं लेती और न ही कभी मरती है। यह दृष्टिकोण जीव-विज्ञान की उस अवधारणा से जुड़ता है जिसमें शरीर को कोशकाओं ,ऊतक, और अंगो का संयोजन माना जाता है, परन्तु गीता चेतना को मूल तत्त्व मानती है

श्रीमद्भगवद्गीता के दूसरे अध्याय का १३वाँ श्लोक आत्म-ज्ञान की नींव रखने वाले सबसे महत्वपूर्ण श्लोकों में से एक है।

**देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।**
**तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥2.13॥**

"जिस प्रकार इस शरीर में जीवात्मा बालकपन, युवावस्था और वृद्धावस्था को प्राप्त करती है, वैसे ही मृत्यु के पश्चात् वह दूसरे शरीर को प्राप्त करती है। अतः धीर (बुद्धिमान) पुरुष इस विषय में मोहित नहीं होते।"

भगवान कृष्ण अर्जुन को यह समझा रहे हैं कि परिवर्तन शरीर का स्वभाव है, आत्मा का नहीं:

**अवस्था परिवर्तन:** हम अपनी आँखों से देखते हैं कि एक बच्चा जवान होता है और फिर बूढ़ा हो जाता है। शरीर पूरी तरह बदल जाता है, लेकिन हम जानते हैं कि "मैं वही हूँ।" यानी शरीर बदलने पर भी अंदर बैठा व्यक्ति (आत्मा) नहीं बदलता।

**देह-परिवर्तन:** कृष्ण कहते हैं कि मृत्यु भी बुढ़ापे की तरह ही एक शारीरिक अवस्था है। जैसे हम पुराने कपड़े बदलकर नए पहनते हैं, वैसे ही आत्मा एक पुराना शरीर छोड़कर नया शरीर धारण कर लेती है।

**मोह का त्याग:** जो व्यक्ति 'धीर' है (जिसके पास आध्यात्मिक ज्ञान है), वह जानता है कि मृत्यु अंत नहीं, बल्कि केवल एक बदलाव है। इसलिए वह अपने प्रियजनों की मृत्यु पर विलापित या भ्रमित नहीं होता।

**इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ।**
**एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ॥ 13.1 ॥**

श्री भगवान ने कहा— हे कुन्तीपुत्र (अर्जुन)! यह शरीर 'क्षेत्र' (खेत) के नाम से जाना जाता है और जो इस शरीर को जानता है (इसका ज्ञाता है), उसे तत्व को जानने वाले विद्वानों ने 'क्षेत्रज्ञ' (खेत का जानने वाला) कहा है।

**क्षेत्र (Field):**हमारा शरीर एक खेत की तरह है। जैसे खेत में बीज बोने पर फसल मिलती है, वैसे ही इस शरीर द्वारा किए गए कर्मों के फल हमें भोगने पड़ते हैं।

**क्षेत्रज्ञ (Knower of the Field):**शरीर के भीतर रहने वाली वह चेतना या आत्मा जो यह जानती है कि "यह मेरा शरीर है," वह 'क्षेत्रज्ञ' है।

**क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।**
**क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥ 13.3॥**

**The Asian Thinker**
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
**Website:** www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

हे भरतवंशी अर्जुन! तू सब क्षेत्रों (शरीरों) में 'क्षेत्रज्ञ' (जीवात्मा) मुझे ही जान। और क्षेत्र तथा क्षेत्रज्ञ को जो तत्व से जानना है, वही मेरे मत में 'ज्ञान' है।

**ईश्वर का निवास:** यहाँ कृष्ण एक बहुत गूढ़ बात कह रहे हैं—हर शरीर में जो 'जानने वाला' है, वह मूल रूप से परमात्मा का ही अंश है।

**ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।**
**मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥15.7॥**

"इस संसार में जीव (आत्मा) मेरा ही सनातन अंश है। वही प्रकृति में स्थित मन और पाँचों इन्द्रियों को (अपने साथ) खींचता है।"

भगवान कृष्ण यहाँ अर्जुन को मनुष्य के वास्तविक स्वरूप के बारे में तीन मुख्य बातें बता रहे हैं:

हमारा मूल स्वरूप (ममैवांशो): श्रीकृष्ण कहते हैं कि प्रत्येक जीवित प्राणी मेरा ही एक अंश है। जैसे समुद्र की एक बूँद में समुद्र के ही गुण होते हैं, वैसे ही हम भी दिव्य हैं। यह अंश 'सनातन' है—यानी यह न कभी पैदा हुआ, न कभी मरेगा।

इन्द्रियों का संघर्ष (मनःषष्ठानीन्द्रियाणि): यद्यपि आत्मा दिव्य है, लेकिन जब वह इस भौतिक संसार (प्रकृति) में आती है, तो वह मन और पाँच इन्द्रियों (आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा) के साथ संघर्ष करती है।

खींचना (कर्षति): आत्मा इन इन्द्रियों और मन को अपने साथ वैसे ही खींचती है, जैसे हवा सुगंध को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती है। यह जीव अपनी इच्छाओं के वश होकर प्रकृति के गुणों में बँध जाता है।

**सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः ।**
**निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥ 14.5 ॥**

"हे महाबाहो (अर्जुन)! सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण—ये तीनों गुण प्रकृति से उत्पन्न हुए हैं। ये अविनाशी जीवात्मा को शरीर में बाँध देते हैं।"

वह पहले कभी अस्तित्व में न थी, ऐसा नहीं है; और आगे भी कभी अस्तित्वहीन नहीं होगी।
वह अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है। शरीर के नष्ट हो जाने पर भी आत्मा का नाश नहीं होता।
अर्थात् आत्मा न जन्म लेती है और न मरती है; शरीर के नष्ट होने पर भी उसका नाश नहीं होता।
इसी प्रकार देह-परिवर्तन के सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए गीता कहती है—

**"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय**
**नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।**
**तथा शरीराणि विहाय जीर्णा**
**न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥" (2.22)**

**The Asian Thinker**
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
**Website:** www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

अर्थात् जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र त्यागकर नए वस्त्र धारण करता है, वैसे ही आत्मा पुराने शरीर का त्याग कर नया शरीर धारण करती है।

इन श्लोकों के आधार पर स्पष्ट होता है कि गीता जीवन को केवल जैविक संरचना के रूप में नहीं, बल्कि चेतन सत्ता की निरंतर यात्रा के रूप में देखती है।

अतः "आध्यात्मिक जीव-विज्ञान" के अंतर्गत गीता का अध्ययन जीवन की उस गहन व्याख्या को उद्घाटित करता है, जिसमें जीव शाश्वत, चेतन और परमात्मा का अंश माना गया है। यह दृष्टिकोण मानव अस्तित्व को केवल भौतिक परिघटना नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उत्क्रांति की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है।

### 5.2. तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method)-

श्रीमद्भगवद्गीता में जीव और जीवन के स्वरूप का विश्लेषण आधुनिक जीवविज्ञान की दृष्टि से तुलना करने योग्य है। तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method) में हम गीता के दृष्टिकोण और आधुनिक विज्ञान के दृष्टिकोण को विचारसंगत रूप से प्रत्यक्ष करते हैं।

**सारणीक्र.: 01. गीता और आधुनिक जीवविज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन**

| **बिंदु** | **आधुनिक जीवविज्ञान** | **गीता का दृष्टिकोण (आध्यात्मिक जीव-विज्ञान)** |
|---|---|---|
| जीवन | केवल जैविक प्रक्रियाओं (कोशिकाएं, अनुवांशिकी, रसायन) का परिणाम है। | चेतन सत्ता (आत्मा) का अस्तित्व है, जो शाश्वत है। |
| चेतना | मस्तिष्क की क्रियाओं का परिणाम है। | आत्मा का गुण है, जो शरीर से स्वतंत्र है। |
| मृत्यु | जीवन का अंत। | केवल शरीर का नाश है; आत्मा शाश्वत है। |
| विकास | जैविक उत्क्रांति। | चेतना की आध्यात्मिक उत्क्रांति। |

### 5.3. व्याख्यात्मक पद्धति (Interpretative Method)

श्रीमद्भगवद्गीता में व्याख्यात्मक पद्धति (Interpretative Method) के माध्यम से श्लोकों के दार्शनिक और आध्यात्मिक अर्थ को समझा जाता है। इस पद्धति में केवल शब्दार्थ नहीं, बल्कि श्लोकों के संदर्भ (context), भावार्थ (meaning) और जीवनोपयोगी सिद्धांत (practical implications) की व्याख्या की जाती है।

#### 4.3.1. जीव का बंधन और मुक्ति

गीता में जीव के बंधन और मुक्ति का विश्लेषण इस प्रकार है।

बंधनों का कारण:

**"कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।**
**इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते॥" (3.5)**

**The Asian Thinker**
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
**Website:** www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

भावार्थ:जो व्यक्ति अपने इंद्रियों और कर्मों को नियंत्रित न कर सके, केवल मन में इच्छाओं का स्मरण करता रहे और मिथ्याचरण (असत्य या बंधनकारी कर्म) करता रहे, उसे बंधित आत्मा कहा गया है।

मुक्ति का मार्ग:

गीता में कहा गया है—

**"सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।**

**अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥" (18.66)**

सभी कर्मकाण्ड और धर्मपथ का त्याग कर केवल भगवान में शरण लेने वाला जीव, मैं उसे सभी पापों से मुक्त कर दूँगा; इसलिए शोक मत कर।

### 5.3.2. व्याख्यात्मक दृष्टि:

**अ). बंधनों की व्याख्या:**– जीव के दुख, मोह और बंधन उसके अज्ञान, अहंकार और इंद्रियासक्ति से उत्पन्न होते हैं।

**ब). मुक्ति की व्याख्या:**– मोक्ष केवल कर्मत्याग या शास्त्रानुशासन नहीं, बल्कि पूर्ण समर्पण और ईश्वर-साक्षात्कार से प्राप्त होता है।

**स). आध्यात्मिक जीव-विज्ञान पर असर:**–जीव शाश्वत चेतन सत्ता है, जो बंधन और मोक्ष की प्रक्रिया में अनुभवकर्ता बनकर सक्रिय होती है। क्त कर दूँगा; इसलिए शोक मत कर।

व्याख्यात्मक पद्धति से स्पष्ट होता है कि गीता शाश्वत चेतना और उसका आध्यात्मिक विकास (मोक्ष) समझने का मार्ग प्रस्तुत करती है।

- बंधन = अज्ञान और कर्मासक्ति
- मुक्ति = ज्ञान और भगवान में समर्पण
- जीव = अनुभवकर्ता चेतन इकाई

## 5.4. सैद्धांतिक निर्माण (Theoretical Formulation)

सैद्धांतिक निर्माण (Theoretical Formulation) में अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों और गीता के श्लोकों के आधार पर "आध्यात्मिक जीव-विज्ञान" की अवधारणा को व्यवस्थित रूप से प्रतिपादित किया जाता है। इसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि जीव का स्वरूप, उसका बंधन और मोक्ष केवल दार्शनिक चिंतन नहीं, बल्कि एक व्यवस्थित सिद्धांतात्मक ढांचे के अंतर्गत समझा जा सकता है।

जीव का शाश्वत स्वरूप

### 5.4.1. गीता के श्लोक के अनुसार:

**"न जायते म्रियते वा कदाचिन्……॥" (2.20)**

**The Asian Thinker**
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
**Website:** www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

सैद्धांतिक व्याख्या:

- आत्मा नित्य, अविनाशी और शाश्वत है।
- यह शरीर के जन्म-मरण से परे है।
- यह चेतन तत्व जीवन का आधार है।

### 5.4.2. शरीर और आत्मा का भेद

**"क्षेत्रं क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वशः।**
**इति ज्ञानेन सविज्ञानेन च हि मे॥" (13.2)**

- शरीर = क्षेत्र (क्षेत्र में परिवर्तनशील तत्व)
- आत्मा = क्षेत्रज्ञ (अनुभवकर्ता चेतन इकाई)
- सिद्धांत: जीव और शरीर अलग-अलग अस्तित्व हैं।

### 5.4.3. गुण और चेतना का सिद्धांत

त्रिगुण सिद्धांत (अध्याय 14):

- सत्त्व – ज्ञान और प्रकाश
- रजस् – क्रिया और इच्छा
- तमस् – जड़ता और अज्ञान

सैद्धांतिक व्याख्या:

जीव की चेतना, गुणों द्वारा प्रभावित होती है। गुण = चेतना की प्रवृत्ति और बंधन या मुक्ति का कारण।

### 5.4.4. बंधन और मुक्ति का सिद्धांत

- बंधनों का स्रोत :

**"कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते ……॥ 3.5 ॥"**
**"निसंदेह, कोई भी मनुष्य किसी भी काल में क्षणमात्र भी कर्म किए बिना नहीं रह सकता; क्योंकि प्रत्येक मनुष्य प्रकृति से उत्पन्न गुणों (सत्त्व, रज और तम) द्वारा विवश होकर कर्म करने के लिए बाध्य है।"**

- मुक्ति का मार्ग :

**"सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं……॥18.66॥"**

The Asian Thinker

**The Asian Thinker**
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
**Website:** www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

"सब धर्मों (कर्तव्यों और सांसारिक नियमों) को छोड़कर तू केवल मेरी शरण में आ जा। मैं तुझे समस्त पापों से मुक्त कर दूँगा; तू शोक (चिंता) मत कर।"

- सिद्धांत: बंधन = अज्ञान + अहंकार + इंद्रियासक्ति
- मुक्ति = समर्पण + ज्ञान + ईश्वर-साक्षात्कार

### 5.4.5 "आध्यात्मिक जीव-विज्ञान" का सार

सैद्धांतिक रूप से गीता का आध्यात्मिक जीव-विज्ञान निम्न सिद्धांतों पर आधारित है:

- जीव = शाश्वत चेतन सत्ता
- शरीर = अस्थायी आवरण
- गुण = चेतना के विकास या पतन का आधार
- बंधन = अज्ञान और कर्मासक्ति
- मोक्ष = चेतना की अंतिम आध्यात्मिक उत्क्रांति

**निष्कर्ष;**

गीता के श्लोकों और व्याख्याओं के आधार पर यह सिद्धांत स्पष्ट होता है कि जीव का अध्ययन केवल जैविक दृष्टि से नहीं, बल्कि चेतन सत्ता की दृष्टि से भी आवश्यक है। यह दृष्टिकोण "आध्यात्मिक जीव-विज्ञान" के लिए ठोस सैद्धांतिक आधार प्रस्तुत करता है।

## 6. परिणाम और विवेचना (Results and Discussion): —

श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित जीव (आत्मा) शाश्वत, चेतन और अविनाशी है। शरीर केवल अस्थायी आवरण है, मृत्यु केवल देह का परिवर्तन है (2.20, 2.22)। त्रिगुण सिद्धांत (सत्त्व, रजस्, तमस्) जीव की चेतना और कर्मों को प्रभावित करता है। बंधन अज्ञान, अहंकार और इंद्रियासक्ति से उत्पन्न होता है, जबकि मोक्ष ज्ञान, समर्पण और भगवान में श्रद्धा से प्राप्त होता है (3.5, 18.66)। जीवन केवल भौतिक नहीं, बल्कि चेतना और आत्मा पर आधारित है। शरीर–आत्मा भेद गीता के "आध्यात्मिक जीव-विज्ञान" के मूल सिद्धांत का आधार है(13.2)।

तुलनात्मक दृष्टि से, आधुनिक जीवविज्ञान जीवन को भौतिक प्रक्रियाओं तक सीमित करता है, जबकि गीता चेतना और आध्यात्मिक उत्क्रांति को भी जीवन का मूल आधार मानती है। परिणामस्वरूप, गीता "आध्यात्मिक जीव-विज्ञान" का सिद्धांत प्रस्तुत करती है, जो चेतना, गुण, बंधन और मोक्ष के दार्शनिक अध्ययन के लिए अकादमिक आधार प्रदान करता है।

## 7. संदर्भ सूची (Bibliography)

The Asian Thinker

**The Asian Thinker**
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
**Website:** www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

1. वेदव्यास, श्रीमद्भगवद्गीता, महाभारत, भीष्म पर्व, भारत।
2. Bhagavad Gita: As It Is, The Bhaktivedanta Book Trust, 1972.
3. The Essence of the Bhagavad Gita, Nilgiri Press, 2007.
4. Bhagavad Gita: A New Translation, Harmony Books, 2000.
5. Radhakrishnan, S., Indian Philosophy, Vol. II, Oxford University Press, 1999.
6. Sharma, C., Philosophy of the Bhagavad Gita, MotilalBanarsidass, Delhi, 2005.
7. Upanishads, Vedanta Press, 1958.

The Asian Thinker